The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 11 | November 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

किशोरवय विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. मुकेश बाला

एम.फिल, पी0एच0डी0, नेट (गृहविज्ञान) E-mail: drmkbala@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17922249

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 22-11-2025

Published: 10-12-2025

Keywords:

परम्परागत वस्त्र, किशोरवय विद्यार्थी, अभिवृत्ति, सांस्कृतिक धरोहर, भारतीय वस्त्र परम्परा।

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य किशोरवय विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। भारत में वस्त्र निर्माण की परम्परा वैदिक काल से चली आ रही है और विभिन्न क्षेत्रों में बंधेज, चंदेरी, पटोला, कांजीवरम आदि जैसे विशिष्ट वस्त्र विकसित हुए हैं। पारम्परिक वस्त्र किसी भी संस्कृति की पहचान, इतिहास और सामाजिक मूल्यों का प्रतीक होते हैं। वर्तमान आधुनिक युग में पाश्चात्य पहनावे की ओर आकर्षण बढ़ने से पारम्परिक वस्त्रों का प्रचलन कम हुआ है। इस अध्ययन में जिला बिजनौर के धामपुर शहर के माध्यमिक स्तर के 120 विद्यार्थियों को लॉटरी विधि से चयनित किया गया। आंकड़ों के संग्रहण हेतु एक प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसमें 30 कथन सम्मिलित थे। आंकड़ों के विश्लेषण में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि किशोरवय विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है ($t = 2.26$, $p < 0.05$) छात्राओं की अभिवृत्ति छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक पाई गई। निवास क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया ($t = 0.91$, $p > 0.05$)। यह अध्ययन सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण तथा युवाओं में पारम्परिक वस्त्रों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

प्रस्तावनाः–

भारत प्राचीन काल से ही अपनी आकर्षक, अलौकिक, सुन्दर एवं विशिष्ट कढ़ाई के लिये प्रसिद्ध रहा है। यहां के कढ़े हुए सुन्दर एवं आकर्षक वस्त्र विश्व के अनेक देशों में प्रसिद्ध थे। पुराणों एवं वेदों में भी कढ़ाई कला का उल्लेख मिलता है। मोहनजोदड़ों की खुदाई में तांबे की सुई एवं कढ़ाई किये वस्त्रों का चित्रण मिला है। प्राचीन

साक्ष्यों से यह साबित होता है कि कुषाण काल में भी कढ़ाई कला अत्यन्त लोकप्रिय एवं विकसित थी। भारत में वस्त्र निर्माण की परंपरा वैदिक काल से देखी जाती है क्षेत्रीय विविधता के अनुसार विभिन्न प्रकार के वस्त्र जैसे की राजस्थान का बंधेज, पंजाब की फुलकारी, उत्तर प्रदेश की चिकनकारी, कश्मीर का कशीदा, मध्य प्रदेश की चंदेरी, गुजरात का पटोला तथा तमिलनाडु का कांजीवरम आदि विकसित हुए हैं। पारम्परिक वस्त्र न केवल पहनावे तक सीमित हैं बल्कि किसी भी संस्कृति की पहचान, इतिहास और सामाजिक मूल्यों का प्रतीक भी माना जाता है। भारत में पारंपरिक वस्त्रों की विविधता और समृद्धता इसकी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती है। पारंपरिक वस्त्र का अर्थ है– ऐसे परिधान जो किसी विशेष संस्कृति समाज या क्षेत्र की परंपराओं रीति रिवाज और ऐतिहासिक धरोहर से जुड़े होते हैं। यह वस्त्र पीढ़ी दर पीढ़ी चलन में चलते रहते हैं या पहने जाते हैं पारंपरिक वस्त्रों का सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से विशेष महत्व होता है–जैसे साड़ी, धोती, कुर्ता–पजामा, लहंगा–चोली, पगड़ी आदि भारत के विभिन्न परंपरागत वस्त्र हैं। आज के आधुनिक युग में जब लोग पाश्चात्य पहनावे की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं ऐसे में परंपरागत वस्त्रों का चलन थोड़ा कम हुआ है। जिस हेतु फैशन उद्योग ने भी इन परंपरागत वस्त्रों को नया रूप देकर युवाओं के लिये लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया है भारतीय परंपरागत वस्त्रों के प्रकार का हमारे धर्म एवं संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है। विभिन्न देशों की संस्कृतियों, रीति–रिवाजों एवं परंपराओं के समागम से भारत में नई–नई कढ़ाई के टांके एवं नमूने भी विकसित किये गये हैं। भारत में वस्त्र निर्माण की विविधता अद्‌भुत है प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट शैली और परंपरा है उदाहरण के लिए राजस्थान की बंधनी, लखनऊ की चिकनकारी, कांचीपुरम की रेशमी साड़ियां आदि।

परंपरागत वस्त्रों की परिभाषाएं

परंपरागत वस्त्रों को विभिन्न विद्वानों और इतिहासकारों ने परिभाषित किया है इनमें प्रमुख रूप से वस्त्रों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व को केंद्र में रखा गया है। डॉ. विनय कुमार घोष ने परंपरागत वस्त्रों को एक सामाजिक अभिव्यक्त कहा है जो व्यक्ति की पहचान और सामाजिक स्थिति को परिभाषित करते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति में वस्त्रों के महत्व को रेखांकित किया है। टेक्सटाइल मंत्रालय भारत सरकार के अनुसार भी वस्त्र जो पारंपरिक तकनीकों जैसे हथकरघा, कढ़ाई, रंगाई, छपाई आदि से बनाए जाते हैं और जिनका प्रयोग सांस्कृतिक या धार्मिक अवसरों पर होता है, परम्परागत वस्त्रों की श्रेणी में आते हैं।

परंपरागत वस्त्रों के प्रकार

भारत विविधता में एकता का प्रतीक है और इसकी पारंपरिक वस्त्र परंपरा इस विविधता को सुंदरता से दर्शाती है विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और परंपराओं के अनुसार पारंपरिक वस्त्रों के अनेक प्रकार हैं जो न केवल परिधान का हिस्सा है बल्कि सांस्कृतिक पहचान, कला और इतिहास के प्रतीक भी हैं। परंपरागत वस्त्रों के प्रमुख प्रकारों में– साड़ी, लहंगा–चोली, धोती, फुलकारी, अंगरखा (अचकन), चंदेरी, महेश्वरी, पटोला, चिकनकारी, कांथा, पश्मीना आदि प्रमुख हैं।

परंपरागत वस्त्रों का महत्व

1. **सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक–** भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट वस्त्र परंपरा है जैसे बनारसी, सिल्क, चिकनकारी, पटोला, कांजीवरम और पश्मीना जो स्थानीय संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली को दर्शाते हैं।
2. **इतिहास और विरासत का संरक्षण**– पारंपरिक वस्त्र प्राचीन काल से चली आ रही तकनीक और शिल्प कौशलों का जीवंत उदाहरण है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं।
3. **आर्थिक योगदान–** भारत का वस्त्र उद्योग देश के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है और लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र में।
4. **पर्यावरणीय स्थिरता**– खादी प्राकृतिक रंगों और हस्त निर्मित वस्त्रो का उपयोग पर्यावरण के अनुकूल होता है।
5. **सांस्कृतिक धरोहर–** चिकनकारी भारतीय पारंपरिक कढ़ाई कला की समृद्ध विरासत को दर्शाती है।
6. **धार्मिक व शुभ अवसरों की पसंद–** कांजीवरम साड़ियां विशेष रूप से विवाह, त्यौहार और धार्मिक समारोह में पहनी जाती हैं।
7. **शुद्ध रेशम व सोने की ज़री का प्रयोग–** कांजीवरम साड़ियों में उच्च गुणवत्ता वाला रेशम और असली सोने या चांदी की ज़री इस्तेमाल होती है जो इन्हें विशेष बनाती है।
8. **महिला सशक्तिकरण का प्रतीक–** फुलकारी कढ़ाई कला प्राचीन समय से ही पंजाबी महिलाओं द्वारा घर पर ही की जाती रही है जिसमें उनकी सृजनात्मकता और आत्मनिर्भरता झलकती है।
9. **लोक कला की जीवंत अभिव्यक्ति–** कांथा कढ़ाई ग्रामीण महिलाओं द्वारा अपने अनुभवों और कल्पनाओं को कपड़े पर चित्रित करने का एक माध्यम है।

अध्ययन की आवश्यकताः–

भारत एक विविधता से भरा भारत देश है जहां विभिन्न राज्यों और समुदायों की अपनी–अपनी पारंपरिक वेश–भूषाएं हैं यह परंपरागत वस्त्र न केवल सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है बल्कि सामाजिक पहचान और परंपराओं से जुड़ाव का भी माध्यम हैं। आज के बदलते समय में जहां आधुनिकता और पाश्चात्यीकरण का प्रभाव बढ़ रहा है वही किशोरवय विद्यार्थियों में पारंपरिक वस्त्रों के प्रति रूझान का स्तर भी एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। किशोरावस्था जीवन का एक संवेदनशील दौर होता है जिसमें पहचान की खोज, व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक प्रभाव की भूमिका अहम होती है। इस उम्र में किशोवय विद्यार्थी अपने पहनावे के माध्यम से आत्माभिव्यक्ति और सांस्कृतिक जुड़ाव को महसूस करते हैं। कुछ विद्यार्थी गर्व के साथ पारंपरिक पोशाकें पहनते हैं जबकि कुछ आधुनिक फैशन को अधिक प्राथमिकता देते हैं। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि आज की किशोर पीढ़ी पारंपरिक वस्त्रों को किस दृष्टिकोण से देखती है उनमें इसके प्रति कितनी रूचि है और यह रूचि उनकी सोच, व्यवहार और सामाजिक

जुड़ाव को कैसे प्रभावित करती है। पारंपरिक वस्त्र किसी विशेष समुदाय, क्षेत्र या सांस्कृतिक समूह की ऐतिहासिक पोशाकें होती हैं जैसे पंजाब की फुलकारी, उत्तराखंड की रिंगल वेशभूषा, असम की मेखला चादरें आदि वस्त्रों का संबंध सांस्कृतिक पहचान, रीति–रिवाज और सांस्कृतिक धरोहर से है। समकालीन समाज में फैशन और वैश्वीकरण के प्रभाव से पारंपरिक वस्त्रों के प्रति रुझान में कमी आई है लेकिन कुछ क्षेत्रों में पुनरुत्थान भी देखा गया है जैसे खड़ी और हथकरघा वस्त्रों को फिर से अपनाना। विभिन्न सर्वेक्षणों से पता चला है कि युवाओं में परंपरा और फैशन के प्रयोग से रुचि बढ़ी है विशेष कर त्योहार और सांस्कृतिक आयोजनों में सोशल मीडिया और इन्फ्लुएंसर भी जागरूकता फैलाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

परंपरागत वस्त्र न केवल पहनावे का एक माध्यम है बल्कि सांस्कृतिक प्रतीक भी है यह वस्त्र किसी समुदाय की परंपराओं धार्मिक विश्वासों और सामाजिक स्थिति को प्रकट करते हैं। आज की पीढ़ी में पश्चिमी पहनावे की लोकप्रियता के कारण पारंपरिक वस्त्रों के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया है हालांकि कुछ फैशन डिजाइनर और शैक्षणिक संस्थाओं के प्रयासों से इसमें पुनरुत्थान देखा जा रहा है।

अध्ययन के उद्देश्यः–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है–

1- किशोरवय विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन लैंगिक आधार पर करना।
2- किशोरवय विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन निवास क्षेत्र के आधार पर करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएंः–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है–

1. किशोरवय छात्र एवं छात्राओं की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. किशोरवय शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधिः–

प्रस्तुत शोध प्रारूप का मुख्य उद्देश्य किशोरवय विद्यार्थियों की परंपरागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन का सर्वेक्षण करना है। अतः अध्ययन में सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्रः–

प्रस्तुत अध्ययन में किशोरवय विद्यार्थियों की परंपरागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन हेतु जिला बिजनौर के धामपुर शहर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में लिया गया है।

उत्तरदाताओं का चयनः–

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं का चयन जिला बिजनौर के धामपुर शहर में स्थित तथा माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कक्षा–11 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में से किया गया है। जिसमें 120 विद्यार्थियों को लॉटरी विधि से चयनित किया गया है।

प्रश्नावलीः–

आंकड़ों के संग्रहण शोधार्थी द्वारा एक प्रश्नावली निर्मित की गयी। जिसमें कुल 30 कथन हैं तथा प्रत्येक कथन के तीन विकल्प– सहमत, तटस्थ तथा असहमत है। इस प्रश्नावली को कुल 06 खण्डों में विभाजित किया गया है।

आंकड़ों का संकलन एवं वर्गीकरणः–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु आंकड़ों का संकलन चयनित उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के माध्यम से किया गया है। आंकड़ों के संकलन के उपरान्त उद्देश्यों तथा परिकल्पनाओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषणः–

आंकड़ों के विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। जिनमें मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मान शामिल हैं।

परिकल्पना संख्या 01 का परीक्षण एवं निर्वचनः–

किशोरवय छात्र एवं छात्राओं की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 01

किशोरवय छात्र एवं छात्राओं की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांक

प्रतिदर्श	प्रतिदर्श ¼N½	मध्यमान ¼M½	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि	टी–अनुपात ¼t-value½
छात्र	53	29.40	4.32	0.86	2.26

छात्रायें	67	31.33	5.06		

तालिका संख्या 01 से स्पष्ट है कि किशोरवय छात्र एवं छात्राओं की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 29.40 तथा 31.33 प्राप्त हुए है। जबकि मानक विचलन का मान क्रमशः 4.32 तथा 5.06 हैं। दोनों मध्यमानों की तुलना करने पर टी–परीक्षण अनुपात का मान 2.26 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.96 से अधिक है। इस प्रकार पूर्व में बनायी गई शून्य परिकल्पना 'किशोरवय छात्र एवं छात्राओं की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' स्वीकृत नहीं हुई है। अर्थात् किशोरवय विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है। माध्यों के अवलोकन से भी स्पष्ट होता है कि किशोरवय छात्राओं की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक पायी गई।

परिकल्पना संख्या 02 का परीक्षण एवं निर्वचनः–

किशोरवय ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 02

किशोरवय ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांक

प्रतिदर्श	प्रतिदर्श ¼N½	मध्यमान ¼M½	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि	टी–अनुपात ¼t-value½
ग्रामीण विद्यार्थी	44	29.98	4.12	0.86	0.91
शहरी विद्यार्थी	76	30.76	5.19		

तालिका संख्या 02 से स्पष्ट है कि किशोरवय ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 29.98 तथा 30.76 प्राप्त हुए है। जबकि मानक विचलन का मान क्रमशः 4.12 तथा 5.19 हैं। दोनों मध्यमानों की तुलना करने पर टी–परीक्षण अनुपात का मान 0.91 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.96 से कम है। इस प्रकार पूर्व में बनायी गई शून्य परिकल्पना 'किशोरवय ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' स्वीकृत हुई है। अर्थात् किशोरवय विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति पर उनके निवास क्षेत्र का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। परन्तु माध्यों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि किशोरवय शहरी विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक पायी गई।

निष्कर्षः–

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् हैं–

1. किशोरवय विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है। किशोरवय छात्राओं की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक पायी गई।
2. किशोरवय विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति पर उनके निवास क्षेत्र का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। किशोरवय शहरी विद्यार्थियों की परम्परागत वस्त्रों के प्रति अभिवृत्ति ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक पायी गई।

सुझावः–

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं–

- **पाठ्यक्रम में सम्मिलनः** विद्यालयी पाठ्यक्रम में पारम्परिक वस्त्रों के इतिहास, महत्व एवं निर्माण तकनीकों से संबंधित अध्याय सम्मिलित किए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता विकसित हो सके।
- **सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजनः** विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पारम्परिक वस्त्र दिवस, प्रदर्शनियाँ एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी इन वस्त्रों से परिचित हो सकें।
- **फैशन उद्योग की भूमिकाः** फैशन डिजाइनरों को पारम्परिक वस्त्रों को आधुनिक रूप देकर युवाओं में लोकप्रिय बनाने का प्रयास करना चाहिए।
- **छात्रों पर विशेष ध्यानः** अध्ययन में छात्रों की अभिवृत्ति छात्राओं की तुलना में कम सकारात्मक पाई गई, अतः छात्रों में पारम्परिक वस्त्रों के प्रति रुचि जागृत करने हेतु विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।
- **सोशल मीडिया का उपयोगः** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एवं इन्फ्लुएंसर्स के माध्यम से पारम्परिक वस्त्रों के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- **हथकरघा एवं खादी को प्रोत्साहनः** खादी एवं हथकरघा वस्त्रों के उपयोग को प्रोत्साहित करने हेतु सरकारी योजनाओं का व्यापक प्रचार किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

- द्विवेदी, हजारी प्रसाद (1970). भारतीय संस्कृति और साहित्य. राजकमल प्रकाशन।
- घोष, विनय कुमार (2015). भारतीय वस्त्र परम्परा एवं सामाजिक संरचना. नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग।
- भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय (2020). भारतीय पारम्परिक वस्त्रः एक परिचय. https://texmin.nic.in

- चौधरी, आर. के. (2018). भारत में पारम्परिक वस्त्रों की विविधता एवं उनका सांस्कृतिक महत्व. शोध संकलन, 15(2), 45–58।
- गुप्ता, ए. (2019). किशोरों में फैशन एवं पहनावे की बदलती प्रवृत्तियाँ. गृह विज्ञान जर्नल, 12(1), 23–34।
- कुमार, पी., एवं सिंह, एम. (2021). युवाओं में पारम्परिक वस्त्रों के प्रति जागरूकता का अध्ययन. शैक्षिक शोध पत्रिका, 8(3), 112–125।
- पाण्डेय, एस. (2017). भारतीय वेशभूषा का इतिहास. इलाहाबादः हिंदी साहित्य सम्मेलन।
- शर्मा, आर. (2020). पारम्परिक वस्त्र एवं सांस्कृतिक पहचानः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. समाज विज्ञान शोध पत्रिका, 22(4), 78–92।